SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उत्तर आधुनिकता और साहित्य

दिनेश श्रीवास, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
शा. इं. व्ही. पी. जी. महाविद्यालय, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
दिनेश श्रीवास, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
शा. इं. व्ही. पी. जी. महाविद्यालय,
कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 13/09/2021
Plagiarism : 00% on 06/09/2021

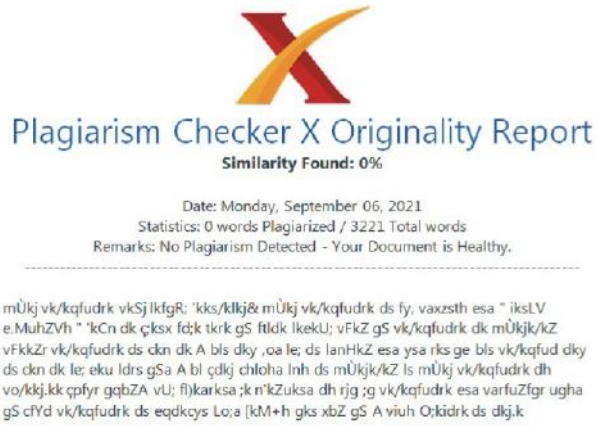
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, September 06, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 3221 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

mÙkj vk/kqfudrk vkSj lkfgR; 'kks/klkj& mÙkj vk/kqfudrk ds fy, vaxzsth esa " iksLV e.MuhZVh " 'kCn dk çksx fd;k tkrk gS ftldk lkekU; vFkZ gS vk/kqfudrk dk mÙkjk/kZ vFkkZr vk/kqfudrk ds dkn dk A bls dky ,oa le; ds lanHkZ esa ysa rks ge bls vk/kqfud dky ds dkn dk le; eku ldrs gSa A bl çdkj chloha lnh ds mÙkjk/kZ ls mÙkj vk/kqfudrk dh vo/kkj.kk çpfyr gqbZA vU; fl)karksa ;k n'kZuksa dh rjg ;g vk/kqfudrk esa varfuZfgr ugha gS cfYd vk/kqfudrk ds eqdkcys Lo;a [kM+h gks xbZ gS A viuh O;kidrk ds dkj.k

शोध सार

उत्तर आधुनिकता के लिए अंग्रेजी में ''पोस्ट मॉडर्नीटी'' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका सामान्य अर्थ है आधुनिकता का उत्तरार्ध अर्थात् आधुनिकता के बाद का। इसे काल एवं समय के संदर्भ में लें तो हम इसे आधुनिक काल के बाद का समय मान सकते हैं। इस प्रकार बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से उत्तर आधुनिकता की अवधारणा प्रचलित हुई। अन्य सिद्धांतों या दर्शनों की तरह यह आधुनिकता में अंतर्निहित नहीं है बल्कि आधुनिकता के मुकाबले स्वयं खड़ी हो गई है। अपनी व्यापकता के कारण सारे आधुनिक प्रतिमानों को चुनौती देने वाली यह अवधारणा मानव की प्रवृत्ति बनने का दावा करती है। यह आधुनिकता के निरंतरता को भी बाधित करती है। धर्म, दर्शन और समाज से लेकर साहित्य जैसे क्षेत्रों में इसका विस्तार लगातार हो रहा है। लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि कुछ ऐसे बिंदु थे जिनके बारे में आधुनिक समाज संशय की स्थिति में था और आज भी है अतः इसी तरह के प्रश्नों को उठाकर इस अवधारणा को विस्तार दिया गया है। संरचनावाद से उत्तर आधुनिक साहित्य के संकेत मिलते हैं। अतः उत्तर आधुनिक साहित्य का सफर संरचनावाद से प्राप्त होता है जो संरचनावाद से प्रारंभ होकर उत्तर संरचनावाद और फिर विखंडनवाद तक प्रसारित होता है। उत्तर संरचनावाद संरचनावाद के सीमांतों की प्रतिक्रिया में शुरू हुआ और विखंडन उसका औजार बना। बाद में विखंडन स्वयं में एक वाद बन गया। यह ऐसा वाद है जो किसी निश्चित समीक्षा सिद्धांत पर नहीं चलता। उत्तर आधुनिकता का साहित्य चिंतन मुख्यतः विखंडनवादी है। उत्तर आधुनिकता में रचना या कृति पाठ बन जाता है। समीक्षा विखंडन बन जाता है।

मुख्य शब्द

उत्तर आधुनिकता, संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर संरचनावाद, देरिदा, पाठ.

उत्तर आधुनिकता के लिए अंग्रेजी में ''पोस्ट मॉडर्नीटी'' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका सामान्य अर्थ है आधुनिकता का उत्तरार्ध अर्थात् आधुनिकता के बाद का। काल एवं समय के संदर्भ में लें तो हम इसे आधुनिक काल के बाद का समय मान सकते हैं। इस प्रकार बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से उत्तर आधुनिकता की अवधारणा प्रचलित हुई। अन्य सिद्धांतों या दर्शनों की तरह यह आधुनिकता में अंतर्निहित नहीं है बल्कि आधुनिकता के मुकाबले स्वयं खड़ी हो गई है। अपनी व्यापकता के कारण सारे आधुनिक प्रतिमानों को चुनौती देने वाली यह अवधारणा मानव की प्रवृत्ति बनने का दावा करती है। आधुनिकता के निरंतरता को भी बाधित करती है। धर्म, दर्शन और समाज से लेकर साहित्य जैसे क्षेत्रों में इसका विस्तार लगातार हो रहा है। लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि कुछ ऐसे बिंदु थे जिनके बारे में आधुनिक समाज संशय की स्थिति में था और आज भी है। अतः इसी तरह के प्रश्नों को उठाकर इस अवधारणा को विस्तार दिया गया है।

उत्तर आधुनिकता का आविर्भाव

उत्तर आधुनिकता के आविर्भाव का केंद्र मार्क्सवादी समाजवादी व्यवस्था ही है, क्योंकि बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के बाद पूंजीवादी लोकतंत्र में पैदा हुई समस्याओं ने वहां के उन बुद्धिजीवियों को काफी विचलित किया जो समाजवाद को भी पूंजीवाद की तरह असफल मानते थे। वे साम्राज्यवादी व्यवस्थाओं के इस बात में यकीन करते थे कि सामाजवादी व्यवस्थाएं बंद व्यवस्थाएं हैं और लोगों को वहां मूलभूत आजादी भी नहीं है। जवरीमल्ल पारख ने अपने लेख में इसे स्पष्ट किया हैः ''बीसवीं सदी के सातवें दशक के बाद पैदा हुई परिस्थितियों ने उन्हें (बुद्धिजीवियों) को मोहभंग की स्थिति में ला खड़ा किया। उन्हें यह प्रतीत हुआ की सभ्यता की जड़ न पूंजीवाद है न समाजवाद बल्कि वह ज्ञानोदय है जिसने इन दोनों तरह के औद्योगिक समाजों को पैदा किया। परिणामतः पूर्ण नकारवादी दृष्टि पैदा हुई और इसे उत्तर आधुनिकता का नाम दिया गया।''

इससे स्पष्ट होता है कि उत्तर आधुनिक स्थिति आधुनिक प्रतिमानों व आधुनिक स्थितियों के प्रति संशय की दृष्टि से उद्भूत है। ज्ञानोदय युग के सभी प्रतिमान संशय की दृष्टि से देखे जाने लगे। आधुनिकता ने जिस सत्य का दावा किया, उसको उत्तर आधुनिक स्थिति में छल माना जाता है। तर्क और बुद्धिमत्ता आधुनिकता के प्रमुख अस्त्र माने जाते थे, जिसे उत्तर आधुनिकता ने तोड़ दिया है। आधुनिकता निश्चित हुआ करती थी किंतु उत्तर आधुनिकता ने मूल्य बोध को तहस–नहस कर दिया है। उत्तर आधुनिक स्थिति में किसी भी मूल्य को अंतिम नहीं माना जाता है। आधुनिकता के ज्ञान को चुनौती देने के कारण उत्तर आधुनिकता के विषय में प्रश्न उठता है कि क्या यह नए ज्ञान बोध को लेकर चला है? परंतु ऐसा कुछ नहीं है क्योंकि निश्चित और सत्य ज्ञान के किसी भी दावे को इसमें खारिज किया जाता है।

उत्तर आधुनिकता के जन्म का केंद्र मार्क्सवादी समाजवादी व्यवस्था ही है क्योंकि बीसवीं सदी की उत्तरार्ध के बाद पूजीवादी लोकतंत्रों में पैदा हुई समस्याओं ने वहां के उन बुद्धिजीवी को काफी विचलित किया जो समाजवाद को भी पूंजीवाद की तरह असफल मान रहे थे। वे साम्राज्यवादी व्यवस्थाओं की इस बात में यकीन करते थे कि समाजवादी व्यवस्थाएं बंद व्यवस्थाएं हैं और लोगों का वहां मूलभूत आजादी भी नहीं है। जवरीमल्ल पारख ने अपने लेख में स्पष्ट किया हैः

''बींसवीं सदी के सातवें दशक के बाद पैदा हुई परिस्थितियों ने उन्हें (बुद्धिजीवियों को) मोहभंग की स्थिति में ला खड़ा किया। उन्हें ये प्रतीत हुआ की समस्या की जड़ न पूंजीवाद है न समाजवाद बल्कि वह ज्ञानोदय है जिसने इन दोनों तरह के औद्योगिक समाजों को पैदा किया। परिणामतः पूर्ण नकारवादी दृष्टि पैदा हुई और इसे उतर आधुनिकता का नाम दिया गया।''

उत्तर आधुनिक स्थिति आधुनिक प्रतिमानों और आधुनिक स्थितियों के प्रति संशय की दृष्टि से उद्भूत है। ज्ञानोदय युग के सभी प्रतिमान संशय की दृष्टि से देखे जाने लगे। आधुनिकता ने जिस सत्य का दावा किया उस सत्य को उत्तर आधुनिक स्थिति में छल माना जाता है। तर्क और बुद्धिमत्ता आधुनिकता के प्रमुख अस्त्र माने जाते थे, जिसे उत्तर आधुनिकता ने तोड़ दिया है। आधुनिकता एक निश्चित मूल्यबोध पर व्यवहृत हुआ करती थी, किंतु उत्तर आधुनिकता ने उस मूल्य बोध को तहस–नहस कर दिया। उत्तर आधुनिक स्थिति में किसी सत्य या मूल्य को अंतिम नहीं माना जाता है।

उत्तर आधुनिकता की वैचारिकता

आधुनिकता के ज्ञानबोध को चुनौती देने के कारण उत्तर आधुनिकता के विषय में प्रश्न उठता है कि क्या यह नए ज्ञान बहुत को लेकर चला है परंतु ऐसा कुछ नहीं है क्योंकि निश्चित और सत्य ज्ञान के किसी भी दावे को इसमें खारिज किया गया है। इसमें एक तथ्य निश्चित अवश्य है और वह है खंडन अर्थात् अब तक के समस्त ज्ञान और तर्क पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करना इस अवधारणा में मुख्य है। प्रश्न करने की शुरुआत इस अवधारणा में आधुनिकता से ही होता है। यहां आधुनिकता के सीमांतों को उजागर करने का कार्य–व्यापार बड़े जोरों से होता है। आधुनिक वैचारिकताओं ने जिन जटिलताओं को हल करने में अपनी अक्षमता बताई उन्हीं जटिलताओं के बल पर यहां संदेह का व्यूहचक्र बनाया जाता है। लोकतंत्र, समाजवाद धर्मनिरपेक्षता कुछ ऐसे बिंदु थे जिनके बारे में आधुनिक समाज संशय की स्थिति में था और आज भी है। इसी तरह के प्रश्नों को उठाकर इस नई अवधारणा को विस्तार दिया गया है। किंतु इसका तात्पर्य नहीं कि उत्तर आधुनिकता में नए विषयों, सिद्धांतों और दर्शनों की खोज नहीं की जाएगी। इसमें आधुनिक सिद्धांतों को भी अंतर्निहित किया जाएगा। अपनी कृति ''उत्तर आधुनिकता और संरचनावाद'' में सुधीश पचौरी इसी प्रकार के मंतव्य को प्रेषित करते हैं:

''उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता का विस्तार भी है और अंतिम बिंदु भी है । वह अनुपस्थित की उपस्थिति है, वह प्रतिनिधित्व रहित की उपस्थिति है ––वह पश्चिम की आधुनिकता के जरायू हो उठने की पीड़ा है और अपना बोझ ना संभाल पाने की विवशता है। (आज हम इस आधुनिकता की सीमाएं अच्छी तरह देख सकते हैं)''

सुधीश पचौरी आधुनिकता के सीमांत से उत्तर आधुनिकता को जोड़ते हैं। आधुनिक वैचारिकता से जो कोना छूट गया था वही कोना उत्तर आधुनिकता का विषय बन गया है। आधुनिकता के नकारात्मक पहलू उत्तर आधुनिकता के सकारात्मक पहलू बन गए हैं। सुधीश पचौरी के अनुसार:

''आज आधुनिक केंद्रीकृत व्यवस्था और स्वायत्त मनुष्य अपने अंतिम रूप में व्यर्थ होने लगे हैं। आधुनिकता का सत्य ही संकटग्रस्त हो गया है। आधुनिक बोध बेकार हो गया है।''

आधुनिक वैचारिकता के संकटग्रस्तता से उत्तर आधुनिक स्थिति का आविर्भाव हुआ है। जब समाज में आधुनिक व्यवस्था संकटग्रस्त हुई और उस पर प्रश्न चिन्ह लगाए गए तो अनायास ही उत्तर आधुनिकता की पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

उत्तर आधुनिकता के प्रतिमान

उत्तर आधुनिक अवधारणा के केंद्र में निर्विवाद रूप से पूंजी है। विकेंद्रीकरण केवल छल के लिए किया जाता है क्योंकि केंद्रीय स्थिति में पूंजी ही है। इस बात से किसी को एतराज नहीं हो सकता चाहे वह मार्क्सवादी हो या गैर मार्क्सवादी। असल में यह विचारधारा किसी तानाशाह के विरोध में नहीं उपजी बल्कि पूंजी स्वातंत्र्य के लक्ष्य को लेकर चली है। अनिश्चिताओं के इस अवधारणा में पूंजी की केंद्रियता ही निश्चित है। चाहे वह जेमसन का बाजारवादी तर्क हो या देरिदा का विखंडनवादी तर्क सभी का लक्ष्य यही है। हां इस लक्ष्य का कोई निर्धारित मार्ग नहीं है। मल्टीनेशनल, राष्ट्रीय सीमाओं की नगण्यता, प्रतिमानों की अस्थिरता आदि जैसे प्रतीक इसी लक्ष्य को साधने के लिए है इसलिए पूंजी को केंद्र में रखकर इसके साजो– सामान तथा हथियार को पहचाना जा सकता

है। इसकी समस्त सहकारिता पूंजी को पोषित करने वाली होती है इसलिए किसी निश्चित साधनामार्ग व सिद्धांत पर इसमें विश्वास नहीं किया जाता। विश्वास का आधार केवल पूंजी है इस प्रकार यदि हम कहना चाहें तो उत्तर आधुनिकता को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैः

1. उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता को चुनौती देने वाली अवधारणा हैं।
2. अपनी व्यापकता के कारण यह भी मनुष्य की वृत्ति बन रही है।
3. इसका जन्म स्थान समाज व राजनीति है, किंतु अब यह सभी क्षेत्रों में पाई जाती है।
4. आधुनिकता के सीमांतों या जटिलताओं को उत्तर आधुनिकता अपना विषय बनाती है।
5. किसी भी प्रकार के निश्चित प्रतिमानों, मूल्यों और सत्यों को यह अवधारणा खारिज करती है।
6. आधुनिक ज्ञानोदय के प्रति नकारात्मक दृष्टि या संशयात्मक दृष्टि ही उत्तर आधुनिकता है।
7. अकेंद्रित होते हुए भी यह पूंजी केंद्रित है।
8. यह एक इतिहास यात्रा है, इतिहास और दर्शन भी है।
9. आधुनिकता के समस्या बिंदु उत्तर आधुनिकता के उत्स बिंदु हैं।

जीवन के विविध क्षेत्रों में उत्तर आधुनिकता का प्रभाव

उत्तर आधुनिकता जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हो रही है। जिन–जिन क्षेत्रों में अब उत्तर आधुनिकता के प्रभाव की पहचान हो चुकी है उन्हें उत्तर आधुनिकता के प्रस्थान बिंदु के नाम से जाना जाता है। प्रायः आज उत्तर आधुनिकता के साथ जिन क्षेत्रों का नाम जोड़ा जाता है उसे प्रस्थान बिंदु कहते हैं। वैसे उत्तर आधुनिकता सिर्फ इन्हीं बिंदुओं तक सीमित है ऐसा दावा करना व्यर्थ है। उत्तर आधुनिकता के प्रमुख प्रस्थान बिंदुओं को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता हैः

1. **बाजार और मानव संबंधः** यह उत्तर आधुनिकता का प्रमुख औजार है।
2. **कुलीनतावादः** इसमें प्रभुत्वशाली लोगों के समर्थन में संपूर्ण उपक्रम किया जाता है।
3. **सत्य के विरुद्ध शब्दः** इसमें मूल्यों के विखंडन की चर्चा की जाती है।
4. **मार्क्सवादी सहायताः** संशोधनवाद के नाम पर मार्क्सवाद के टूटन की चर्चा है।
5. **व्यर्थता का पाठः** विखंडनवाद के तहत वैधता का पाठ पढ़ाया जाता है।
6. **आर्थिक आधारः** उत्तर आधुनिकता के आर्थिक उत्स के कई आयाम हैं।
7. **इतिहास की भूलेंः** इतिहास पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है।

इसके समानांतर सुधीर पचौरी ने भी उत्तर आधुनिकता के निम्नलिखित प्रस्थान बिंदुओं की ओर संकेत किया हैः

1. तकनीक एवं माध्यम का वर्चस्व।
2. आधुनिकता का उत्तर कांड।
3. वृद्ध पूंजीवाद का सांस्कृतिक तर्क।
4. उपभोक्तावादी समाज और वस्तुओं की छलना।

उत्तर आधुनिकता के प्रभाव और लक्षण को समझने के लिए उपरोक्त बिंदुओं को महत्वपूर्ण माना जाता है।

उत्तर आधुनिकता और साहित्य

उत्तर आधुनिक परिदृश्य में ज्ञान के क्षेत्र में बहुत उपद्रव नजर आता है। उत्तर आधुनिक स्थितियों के होने का इससे बड़ा प्रमाण और कुछ नहीं हो सकता कि वह किसी विचार को सिद्धांत रूप में स्थापित करने की चिंता का अवसर भी नहीं देती। अपने तीव्र छलनामय प्रपंच और लीला के बीच वह न किसी सिद्धांत को टिकने देती है

और न बसने देती है। बहुरूपी अतियथार्थ का आगमन पिछली तमाम पद्धतियों को व्यर्थ करता चलता है। आधुनिकता के सारे समीक्षात्मक हथियार भोंथरे होने लगते हैं।

उत्तर आधुनिकता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि बिना किसी निश्चित सिद्धांत के इसने पिछले तमाम सिद्धांतों की जड़ें हिला दी है। दर्शन, मनोविज्ञान राजनीतिशास्त्र के सर्वत्र ही चले आते मानक और ज्ञान प्रविधियां नई स्थितियों में बहुत हद तक निरर्थक दिखाई पड़ते हैं। समीक्षा के क्षेत्र में भी बहुत उलटफेर की संभावना है। रचना और समीक्षा में अब कोई विशेष अंतर नहीं है, क्योंकि रचना स्वयं समीक्षा बन गई है। आधुनिक समीक्षात्मक अवधारणाएं मूलतः मूल्यबोध वाली अवधारणाएं हैं जो औद्योगिकरण की संवेदनाशून्यता के मुकाबले औद्योगिक मूल्यबोध और संवेदनायुग्मों से परिचालित है। साहित्य समीक्षा के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि अब तक की समीक्षा 'मुक्ति के वृतांत' को रचना में खोजने का प्रयास है। यह समीक्षा सर्वत्र (राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन आदि) अथवा सर्वहारा (समाजवाद, साम्यवाद) के वृतांतों की खोज का दूसरानाम है। मानववाद, लोकवाद और समाजवाद परस्पर मित्र होते हुए भी समीक्षा में एकरेखीय प्रणाली बनाते हैं। साहित्य के केंद्र में मनुष्य है। मनुष्य है तो उसकी भावनाएं, संवेदनाएं, संबंध हैं। ये संबंध यथार्थ हैं। ये यथार्थ से कैसा संबंध बना रहे हैं? सामाजिक विकास को बाधित करते हैं तो त्याज्य हैं, बढ़ाते हैं तो स्वीकार्य। आधुनिकता ने जीवन और साहित्य समीक्षा का यह आसान फार्मूला चलाया है।

संरचनावाद से उत्तर आधुनिक साहित्य के संकेत मिलते हैं। साहित्य का सफर संरचनावाद से प्राप्त होता है। जो संरचनावाद से प्रारंभ होकर उत्तर संरचनावाद और फिर विखंडनवाद तक प्रसारित होता है। यहां स्पष्ट हो जाना चाहिए कि उत्तर संरचनावाद, संरचनावाद के सिद्धांतों की प्रतिक्रिया में शुरू हुआ और विखंडन उसका औजार बना। बाद में विखंडन स्वयं में एक वाद बन गया। ऐसा वाद जो किसी निश्चित समीक्षा सिद्धांत पर नहीं चलता है। उत्तर आधुनिकता का साहित्य चिंतन मुख्यतः विखंडनवादी है। उत्तर आधुनिकता में रचना या कृति पाठ बन जाता है। समीक्षा विखंडन बन जाता है। उत्तर आधुनिकता के साहित्य चिंतन को समझने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करना आवश्यक है:

संरचनावाद

संरचना स्थापत्य कला में कला की विभिन्न अंगों की व्यवस्था का नाम है जिसमें हर चीज एक–दूसरे से संबद्ध हो जाती है, जिसमें अलग–अलग तत्व एक–दूसरे से जुड़ जाते हैं जिसमें एक निश्चित रूप उभरता है जो अनेक स्तरीय संरचना के लिए 'मॉडल' यानी आदर्श होता है। अंतिम संरचना होता है। यह अंतिम संरचना जो हर छोटी से छोटी संरचना में होती है, अर्थ का केंद्र होती है। वह हर चीज को मायने देती है। इसी प्रकार रचना की पूर्णता उसकी अन्विति में निहित है। रचना के सभी पक्षों का आपसी सामंजस्य ही किसी रचना को पूर्ण बनाती है। साथ ही रचना की स्वायत्तता इस बात में हैं कि उसने कला को स्वयंपूर्ण बनाया। एक बार अभिव्यक्त हो जाने के बाद कलाकृति या रचना खुद कलाकार से स्वतंत्र हो जाती है इसलिए रचना की पूर्णता, पाठ की अन्विति आदि को कलाकार के उद्देश्य, व्यक्तित्व, दृष्टिकोण आदि से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। रचना का आस्वाद पाठक अपने तरीके से ले सकता है।

पाठ

पाठ रचना से तात्पर्य मौलिक सर्जना से है अर्थात् किसी विचार, सिद्धांत या घटना का रचनाकार के अनुभव के साथ प्रकट होना। उत्तर आधुनिकता में साहित्य को लेखक की इयत्ता से पृथक माना जाता है इसलिए कोई कृति रचना नहीं हो सकती, तब उसे पाठ कहा गया है। सीधे शब्दों में लेखक के हेतुवाद, सम्प्रेष्य और संदेश से मुक्त कृति ही पाठ है। पाठ में पाठक अपने अनुसार अर्थ प्राप्त करता है।

विखंडन

विखंडन सत्यता का दावा करने वाले तर्क को उसी के विरोध में खड़ा करने और उससे छिपने (दमित) वाले अर्थ को खोजने की रणनीति है। यह देरिदा की पाठात्मक रणनीति (पढ़ने का ढंग) है। पश्चिमी दर्शन की योजना

सत्य की उपस्थिति और भाषा की प्राथमिक उपस्थिति की योजना रही है। भाषा की अलंकार योजना (विशेषण योजना) इस सत्य को कहते हुए भी छिपाती है। विखंडन का काम इसी अंतर्विरोध को प्रकट करना है। विखंडन सत्य का नया सिद्धांत नहीं है बल्कि पाठ का सिद्धांत है, लेखन का सिद्धांत है। वह उन शून्यों में जाता है जहां सत्य हो सकता है। इसी विखंडनवादी सिद्धांत पर उत्तर आधुनिक साहित्य टिका है।

उत्तर आधुनिकता और साहित्यिक मान्यताएं

साहित्य सचाई है न की सत्य। सचाई बहुलतापरक होता है अर्थात् इसमें एक निश्चित सत्य का दावा नहीं किया जाता। साहित्य को अनेक दृष्टिकोणों और संदर्भों में देखा जा सकता है। साहित्य और दूसरों में फर्क है सत्य और सचाई को लेकर। सत्य अंतिम होता है, सचाई बहूलतापरक।

साहित्य

चिंतक का काम यह नहीं कि वह भी सत्य का दावा करे। वह दर्शन/साहित्य या इतिहास/साहित्य के 'हिंसक पदक्रम' को बदलकर साहित्य/दर्शन या साहित्य/इतिहास कर देता है तो यह अपराध है। यही नहीं वह यदि दर्शन या इतिहास का उन्मूलन करके साहित्य को उसी जगह बिठा देता है तो यह भी दूसरे के सत्य ही जगह साहित्य के सत्य को बिठा देनेवाली उपनिवेशवादी मानसिकता होगी।

अन्य ज्ञान–शाखाएं तो सत्य का दावा करती है, इसलिए अपने उपनिवेश (साम्राज्य) बनाती हैं। साहित्य सत्य का दावा नहीं करता है। इस तरहः

1. साहित्य किसी अंतिम सत्य का दावा नहीं करता है।
2. साहित्य किसी औदात्य मुल्यों या महावृत्तांत के खोज का नाम नहीं है।
3. लेखन 'वाक' का पूरक है, वाक स्वयं एक पूरक है। हर पाठ लेखन का पूरक है। पूरकों की एक श्रृखंला है साहित्य और कुछ नहीं।
4. लेखन, इस तरह एक पुरक कर्म है। पूरक यानी एक प्रयत्न, बाहर से किया गया। पूरक ही 'पार्थक्य' पैदा करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज उतर आधुनिक स्थितियों से बचना हर व्यक्ति के लिए असंभव है। उतर आधुनिक स्थितियों को स्वीकार करने वाला वर्ग अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित और सुसंस्कृत है। अतः इन्हें सकारात्मक विचारधारा को लेकर चलना चाहिए। अगर उत्तर आधुनिकता को केवल मार्क्सवाद विरोधी बताया जाता है, यदि उसे मूल्यनिरपेक्ष करार दिया जाता है और उससे यदि एक नए अनिश्चितता के सिद्धांत को जन्म दिया जाता है (क्योंकि उत्तर आधुनिकता में प्रत्येक स्थिति को अनिश्चित माना जाता है। चाहे वह मूल्य के संदर्भ में हो या विचारधारा के संदर्भ में हो) तो इस नये ज्ञानात्मक स्थिति का कोई औचित्य नहीं है।

हमें स्मरण रखना होगा कि मनुष्य ने जो विकास किया है उसका आधार सृजनात्मकता, सकारात्मकता और प्रतिबद्धता ही है। हमें उन स्थितियों से बचना होगा जो रूढ़ियों, अंधविश्वासों और मूल्यनिरपेक्ष स्थितियों को आमंत्रित करते हैं। उत्तर आधुनिक स्थितियों में साहित्य के कद में वृद्धि हुई है। साहित्य का पृथक रूप से अध्ययन संभव हो रहा है। साहित्य को समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र की तरह महत्व दिया जा रहा है लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि साहित्य अपने मूल उद्देश्य से भटक न जाए। ''सर्वकल्याण'' की प्रतिबद्धता उससे छूट न जाए। उसकी सकारात्मकता और सृजनात्मकता में कमी न आये। साहित्य को केवल खंडन का पर्याय नहीं मानना चाहिए साहित्य का अर्थ ''समाजहित'' ही होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. पचौरी, सुधीश, (2000) *''उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद,''* राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. चौहान, संजय, (2011) *''उत्तर आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास,''* आशा प्रकाशन, दिल्ली।
3. दोषी, एस. एल., (2009) *''उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श,''* रचना प्रकाशन, दिल्ली।
4. पालीवाल, कृष्णदत्त, (2005) *''उत्तर आधुनिकता की ओर,''* वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
5. नगेंद्र (संपादक), (2004) *''हिंदी साहित्य का इतिहास,''* नेशनल पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
6. वर्मा, धनंजय, (1994) *''आधुनिकता, के बारे में तीन अध्याय,''* विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
7. गुप्ता, दुर्गाप्रसाद (1997) *''आधुनिकतावाद,''* आकाशदीप प्रकाशन, दिल्ली।
8. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (1995) *''समकालीन साहित्यः नया परिदृश्य,''* अनुभूति प्रकाशन, इलाहाबाद।

****